वार्षिक बकरी स्वास्थ्य - सुरक्षा चक्र

(आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण बकरी रोगों का प्रबंधन)

टीकाकरण

टीकाकरण का विवरण	प्रारम्भिक टीकाकरण		वैक्सीन की मात्रा	प्रयोग की विधि	पुनः टीकाकरण
	प्रथम टीका	बूस्टर टीका			
बकरी प्लेग (पी.पी.आर)	3-4 माह की आयु	आवश्यक नहीं	1 मिली या कंपनी के निर्देशानुसार	SC**	3 वर्ष
इंटेरोटोक्सिमिया (ई.टी.)	3-4 माह की आयु	आवश्यक है*	1 मिली या कंपनी के निर्देशानुसार	SC	6 माह
बकरी चचक (Goat Pox)	3-4 माह की आयु	आवश्यक नहीं	1 मिली या कंपनी के निर्देशानुसार	SC	प्रतिवर्ष
खुरपका व मुंहपका रोग (F.M.D.)	3-4 माह की आयु	आवश्यक नहीं	1 मिली या कंपनी के निर्देशानुसार	IM**	प्रतिवर्ष
गलघोंटू / हिमोरेजिक सेप्टीसीमीया (एच.एस.)	3-4 माह की आयु	आवश्यक नहीं	1 मिली या कंपनी के निर्देशानुसार	SC	प्रतिवर्ष

नोट - दो टीके 10-15 दिन के अन्तराल पर लगवा सकते हैं। टीके की मात्रा (डोज) कम्पनी के निर्देशानुसार रखें।

- प्रथम टीकाकरण के 3-4 सप्ताह के पश्चात दूसरा टीका दिया जाता है,इस प्रक्रिया को **बूस्टर टीका** कहते हैं।
- "SC" का अर्थ सबक्यूटेनियस (Subcutaneous)होता है,जिसका मतलब है त्वचा के नीचे की वसायुक् परत में इंजेक्शन देना।
- "IM" का अर्थ है इंट्रामस्क्युलर (Intramuscular), जिसका मतलब है कि दवा शरीर की किसी बड़ी मांसपेशी में इंजेक्शन देना।

सामूहिक रोग नियंत्रण

रोग का विवरण	आयु	उपचार का समय	विशेष विवरण
कॉक्सीडियोसिस (कुकडिया रोग)	2-6 माह पर	2-6 माह की आयु के बीच ही रोग का प्रभाव रहता है	कॉक्सीडियोस्टेट/निरोधक दवा (एमप्रोलियम 10-50 मिलीग्राम/किलोग्राम शारीरिक भार या चिकित्सक की सलाहानुसार 5 दिनों तक निर्धारित मात्रा में पिलानी चाहिए।
अन्तः परजीवी	3-4 माह की आयु में	वर्षा ऋतु के प्रारम्भ तथा अन्त में	सभी पशुओं को कृमिनाशक दवा चिकित्सक के परामर्शानुसार (जैसे- फेनबेन्डाजोल 7.5-10 मिग्रा/ किग्रा. शारीरिक भार अनुसार) एक बार पिलानी चाहिये।
द्रव्य परजीवी (डीपिंग)	समस्त आयु वर्गों में	शरद ऋतु के प्रारम्भ	सभी पशुओं को एक साथ नहलाना चाहिये।

नोट - डिपिंग में मौसम का विशेष ध्यान रखें (वर्षा के दिनों में पर्याप्त धूप होने पर ही डिपिंग करायें।)

- थनैला (Mastitis)प्रति ब्यांतथनैला रोग की अवस्था की जाँच करायें तथा उपयुक्त उपचार तुरन्त करायें।
- बाहय एवं अन्तः परजीवी रोगों के लिए समय-समय पर मॅगनी में अन्तः परजीवी के अण्डे के प्रकार एवं संख्या की जाँच करें तथा उपयुक्त कृमिनाशक का प्रयोग करें। नियमित शारीरिक भार की जाँच आवयश्क है।
- नवजात बच्चे को जन्म के आधा से एक घण्टे में खीस / कोला प्रथम दूध (Colostrum) को पिलाना आवश्यक है। नवजात बच्चे की नाभि पर टिंचर आयोडीन का घोल नाल के निकलने तक अवश्य लगायें।